४. वैदिक संस्कृति

४.१ वैदिक साहित्य
४.२ परिवार व्यवस्था, दैनिक जीवन
४.३ खेती, पशुपालन, आर्थिक और सामाजिक जीवन
४.४ धार्मिक संकल्पनाएँ
४.५ शासन व्यवस्था

४.१ वैदिक साहित्य

'वेद' साहित्य पर आधारित संस्कृति ही वैदिक संस्कृति है । हमारे अति प्राचीन साहित्य के रूप में वेदों को माना जाता है । अनेक ऋषियों द्‌वारा वेदों को रचा गया है । वेदों में समाविष्ट कुछ सूक्त स्त्रियों द्‌वारा भी रचित हैं ।

वैदिक साहित्य की भाषा संस्कृत है । वैदिक साहित्य अत्यंत संपन्न साहित्य है । इन वेदों में ऋग्वेद मूल ग्रंथ माना जाता है । वह काव्यरूप में है । ऋग्वेदसहित यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार वेद हैं । इन चार वेदों के ग्रंथों को 'संहिता' कहते हैं । विद् का अर्थ जानना है । इसी से 'वेद' संज्ञा का निर्माण हुआ है । इसका अर्थ 'ज्ञान' होता है । मौखिक पठन के आधार पर वेदों को संरक्षित रखा गया । वेदों को 'श्रुति' भी कहते हैं ।

ऋग्वेद संहिता : ऋचाओं से बने हुए वेद को 'ऋग्वेद' कहते हैं । स्तुति करने के लिए रचे गए पद्‌य को ऋचा कहते हैं । किसी देवता की स्तुति करने के लिए कई ऋचाओं को गूँफकर बनाए गए काव्य को 'सूक्त' कहते हैं । ऋग्वेद संहिता में विभिन्न देवताओं के स्तुतिपरक सूक्त हैं ।

यजुर्वेद संहिता : यज्ञ में जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता है; उनका समावेश यजुर्वेद संहिता में है । यज्ञ विधि में किन मंत्रों का पाठ कब और कैसे करें; इसका मार्गदर्शन इस संहिता में प्राप्त है । इस संहिता में पद्‌य में रचित मंत्रों का स्पष्टीकरण गद्‌य में किया गया है ।

क्या तुम जानते हो ?

कुछ सूक्तों के हिंदी भाषा में अर्थ :

* "हे ईश्वर, बहुत वर्षा होने दो, हमारे खेतों में लहलहाती फसल उगने दो । हमारे बच्चों को खूब दूध-घी मिलने दो ।"
* "हमारे घरों में गायें आने दो । हमारी गोठों में उन्हें आनंद से रहने दो । उनके बहुत बछिया-बछड़े होने दो ।"
* "लोगो ! चलिए, उठिए, उषा के आगमन के साथ अंधेरा नष्ट हो गया है और प्रकाश का आगमन हो रहा है । उषा ने संपूर्ण विश्व को जगाया है । हम अपने-अपने कार्य और उद्‌योग कर धन प्राप्त करेंगे ।"

सामवेद संहिता : कुछ यज्ञों की विधियों के समय सुर-ताल में मंत्रों का गान किया जाता था । यह गायन कैसे करना चाहिए; इसका मार्गदर्शन सामवेद संहिता में किया गया है । भारतीय संगीत के निर्माण में सामवेद का बहुत बड़ा योगदान है ।

अथर्ववेद संहिता : अथर्ववेद की संहिता को अथर्व ऋषि का नाम दिया गया है । अथर्ववेद में दैनिक जीवन की अनेक बातों को महत्त्व दिया गया है । इसमें यह बताया गया है कि जीवन में आनेवाले संकटों और दुखों का निवारण किस प्रकार किया जा सकता है । इसी भाँति इसमें असंख्य औषधीय वनस्पतियों की जानकारी भी दी गई है । राजा को अपना राज्य किस प्रकार चलाना चाहिए; इसका भी मार्गदर्शन इसमें किया गया है ।

संहिताओं की निर्मिति होने के बाद ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों को रचा गया । वैदिक साहित्य में उनका भी समावेश किया जाता है ।

ब्राह्मण ग्रंथ : यज्ञ विधियों में वेदों का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए; इसका मार्गदर्शन करनेवाले ग्रंथों को 'ब्राह्मण ग्रंथ' कहते हैं । प्रत्येक वेद के स्वतंत्र ब्राह्मण ग्रंथ हैं ।

आरण्यक : अरण्य में जाकर एकाग्रता से किया

मनन 'आरण्यक' ग्रंथों में प्रस्तुत किया गया है । यज्ञ विधि संपन्न करते समय किसी भी प्रकार की भूल न हो; इसकी सावधानी इसमें बरती गई है ।

उपनिषद : 'उपनिषद' का अर्थ गुरु के निकट बैठकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान है । हमारे मन में जन्म-मृत्यु जैसी कई घटनाओं के बारे में असंख्य प्रश्न उठते रहते हैं । उन प्रश्नों के उत्तर आसानी से नहीं मिलते । ऐसे गहन प्रश्नों पर उपनिषदों में विचार-विमर्श किया गया है ।

चार वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों और उपनिषदों को रचने में लगभग पंद्रह सौ वर्षों की कालावधि लग गई । इस कालावधि में वैदिककालीन संस्कृति में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते गए । उन परिवर्तनों और वैदिक समय के जनजीवन का अध्ययन करने के लिए वैदिक साहित्य महत्त्वपूर्ण साधन है ।

४.२ परिवार व्यवस्था, दैनिक जीवन

वैदिक समय में संयुक्त परिवार पद्धति प्रचलित थी । परिवार का वरिष्ठ पुरुष परिवार का प्रमुख अर्थात 'गृहपति' होता था । गृहपति के परिवार में उसके वृद्ध माता-पिता, उसके छोटे भाई और उन भाइयों के परिवार, गृहपति की पत्नी और बेटे, उसके बेटों के परिवार का समावेश रहता था । यह परिवार व्यवस्था पितृप्रधान थी । प्रारंभिक समय में लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी जैसी कुछ विदुषियों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है । परंतु धीरे-धीरे स्त्रियों पर अधिक बंधन लदते गए । परिवार और समाज में उनका स्थान अधिकाधिक गौण बनता गया ।

वैदिक समय में मकान मिट्टी अथवा टट्टियों बाड़ों के बने होते थे । घास अथवा बेलों की मोटी टट्टियाँ अथवा बाड़ बुनकर उसे गोबर, मिट्टी से लीपते थे । यह एक प्रकार की दीवार होती थी । इन मकानों की भूमि गोबर-मिट्टी से लीपी जाती थी । मकान के लिए 'गृह' अर्थात 'शाला' शब्द का प्रयोग किया जाता था ।

वैदिक समय के लोगों के भोजन में मुख्य रूप से गेहूँ, जौ, चावल जैसे धानों का समावेश था । इन धानों से वे विभिन्न पदार्थ बनाते थे । वैदिक साहित्य में 'यव' 'गोधूम' ' ब्रीहि' जैसे शब्द पाए जाते हैं । यव अर्थात जौ (बार्ली), गोधूम अर्थात गेहूँ और ब्रीहि अर्थात चावल है । वैदिक लोगों को दूध, दही, मक्खन, घी, शहद जैसे पदार्थ प्रिय थे । उनके भोजन में उड़द, मसूर, तिल तथा मांस जैसे पदार्थों का भी समावेश था ।

वैदिक युग के मकान

वैदिक युग में लोग ऊनी और सूती वस्त्रों का उपयोग करते थे । वल्कल अर्थात वृक्षों की छालों से बनाए गए वस्त्रों का भी उपयोग करते थे । इसी भाँति पशुओं के चमड़ों का भी उपयोग वस्त्रों के रूप में करते थे । स्त्रियाँ और पुरुष फूलों की मालाएँ, विभिन्न प्रकार के मनकों की मालाएँ और सोने के आभूषणों का उपयोग करते थे । गले में पहना जानेवाला 'निष्क' नामक आभूषण विशेष लोकप्रिय रहा होगा । उसका उपयोग वस्तुओं के क्रय-विक्रय हेतु भी किया जाता था ।

गायन, वादन, नृत्य, पाँसों का खेल, रथों की दौड़ और शिकार करना वैदिक लोगों के मनोरंजन के साधन थे । वीणा, शततंतु, झाँझ और शंख उनके प्रमुख वाद्य थे । वे डमरू और मृदंग जैसे तालवाद्यों का भी उपयोग करते थे ।

वैदिक युग के वाद्य

४.३ खेती, पशुपालन, आर्थिक और सामाजिक जीवन

वैदिक युग में खेती करना प्रमुख व्यवसाय था । कई बैलों को हल के साथ जोतकर खेतों की जोताई की जाती थी । हल में लोहे की फाल लगाई जाती थी । अथर्ववेद में फसलों में लगनेवाले रोग, फसलों को नष्ट करने वाले कीट और उनके उपायों पर विचार किया गया है । खाद के रूप में गोबर का उपयोग किया जाता था ।

वैदिक युग में घोड़ा, गाय-बैल, कुत्ता जैसे प्राणियों को विशेष महत्त्व प्राप्त था । विनिमय के रूप में गायों का उपयोग किया जाता था । फलस्वरूप गायों को विशेष महत्त्व और मूल्य प्राप्त था । गायों को कोई चुराकर ले न जाए; इसकी विशेष सावधानी बरती जाती थी । घोड़ा अति वेगवान पशु है । उसे पालतू बनाकर रथों में जोतने में वैदिक युग के लोग पारंगत थे । वैदिक युग के रथों के पहिये आरेवाले थे । ठोस पहियों की तुलना में आरेवाले पहिये भार में हल्के होते हैं । घोड़ों से जुते हुए तथा आरेवाले पहियों के वेदकालीन रथ बहुत वेगवान हुआ करते थे ।

वैदिक युग का रथ

क्या तुम जानते हो ?

घोड़े को 'अश्व' कहते हैं । किसी इंजन की गति को मापने के लिए जिस इकाई का उपयोग किया जाता है; उसे 'अश्वशक्ति' (हॉर्सपॉवर) कहते हैं ।

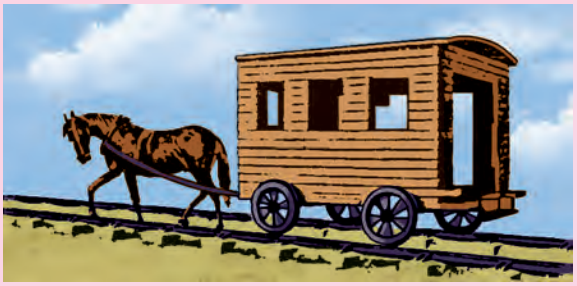

वैदिक युग में खेती और पशुपालन के अतिरिक्त अन्य अनेक व्यवसायों का भी विकास हुआ था । व्यवसायी तथा श्रमिक अर्थात कारीगर समाज व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंग थे । 'श्रेणी' शब्द से अपनी पहचान बनाए रखनेवाले उनके स्वतंत्र संघ थे । इन श्रेणियों के प्रमुख व्यक्ति को 'श्रेष्ठी' कहते थे, परंतु धीरे-धीरे व्यवसायियों, कारीगरों की श्रेणी दोयम अर्थात गौण होती गई ।

तत्कालीन समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण थे । ये वर्ण व्यवसाय के आधार पर निर्धारित थे । कालांतर में ये वर्ण जन्म के आधार पर निर्धारित किए जाने लगे । परिणामतः जातियाँ उत्पन्न हुईं । इस जाति व्यवस्था के फलस्वरूप समाज में विषमता पैदा हुई ।

आदर्श जीवन कैसे जीएँ; इस बारे में वैदिक युग में कुछ संकल्पनाएँ रूढ़ हो गई थीं । उनमें जन्म से लेकर मृत्यु तक के चार चरणों को 'चार आश्रम' कहा गया है । पहले चरण से तात्पर्य 'ब्रह्मचर्याश्रम' है । इस चरण में गुरु के सानिध्य में रहकर विद्या प्राप्त की जाती थी ।

ब्रह्मचर्याश्रम को सफलता से पूर्ण करने के पश्चात अगला चरण 'गृहस्थाश्रम' होता था । इस आश्रम में पुरुष अपनी पत्नी के सहयोग से परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे; यह अपेक्षा की जाती थी । तीसरे आश्रम से तात्पर्य 'वानप्रस्थाश्रम' था । इस चरण में मनुष्य घर-बार का मोह त्यागकर दूर चला

गुरु-शिष्य

जाए, निर्जन स्थान पर रहे और अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन बिताए; यह अपेक्षा की जाती थी । चौथे चरण से तात्पर्य 'संन्यासाश्रम' है । इस चरण में मनुष्य सभी रिश्ते-नातों को त्यागकर मानव जन्म का अर्थ समझने में जीवन व्यतीत करे, बहुत समय तक एक स्थान पर न रहे; यह संकेत निहित था ।

४.४ धार्मिक संकल्पनाएँ

वैदिक युग की धार्मिक संकल्पनाओं में प्रकृति के सूर्य, हवा, वर्षा, बिजली, आँधी, नदियाँ जैसी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप मान लिया गया था । वे जीवनदायी सिद्ध हों; इसके लिए वेदों में उनकी प्रार्थनाएँ की गई हैं । उन्हें प्रसन्न करने के लिए वैदिक युग के लोग अग्नि में विभिन्न पदार्थ अर्पित करते थे । उस पदार्थ को 'हवि' कहते थे । इस प्रकार अग्नि में 'हवि' अर्पित करने की विधि को 'यज्ञ' कहते हैं । प्रारंभ में यज्ञ विधियों का स्वरूप सीधा-सादा था । कालांतर में यज्ञ के नियम अधिकाधिक कठोर होते गए । इससे यज्ञ विधि कार्य जटिल होता गया । परिणामतः पुरोहितों का महत्त्व बढ़ता गया ।

यज्ञ

सृष्टि का व्यवहार कैसे चलता है; इसका भी विचार वैदिक युग के लोगों ने किया था । ग्रीष्मकाल के बाद वर्षाकाल आता है और वर्षाकाल के बाद शीतकाल । यह सृष्टि का नियमित चक्र है । सृष्टि का चक्र और उसकी गति द्वारा घूमनेवाले जीवन चक्र को वेदकालीन लोगों ने 'ऋत' नाम दिया था । सभी सजीवों का जीवन सृष्टि के चक्र का ही एक अंग है । सृष्टि के चक्र में दोष उत्पन्न होने पर संकट आते हैं । ऐसा न हो; इसलिए प्रत्येक को सावधानी बरतनी चाहिए । किसी को भी सृष्टि के नियमों का भंग नहीं करना चाहिए । ऐसा आचरण करना ही धर्म का पालन करना है; ऐसा माना जाता था ।

चलो,विचार विमर्श करेंगे ।

सृष्टि के चक्र में दोष किस कारण उत्पन्न हो सकते हैं? वे दोष उत्पन्न न हों; इसके लिए तुम कौन-से प्रयास करोगे ? जैसे- बरसात कम हो तो पेयजल का नियोजन कैसे करोगे ?

४.५ शासन व्यवस्था

वैदिक युग में प्रत्येक ग्राम समूह का एक प्रमुख व्यक्ति होता था । उसे 'ग्रामणी' कहते थे । कई ग्रामों के समूह को 'विश्' कहते थे और उसके प्रमुख को 'विशपति' कहते थे । कई 'विश्' मिलकर 'जन' बन जाते थे । कालांतर में जब यह जन किसी विशिष्ट प्रदेश में स्थायी हो जाता था तब उस प्रदेश को 'जनपद' कहते थे । 'जन' के प्रमुख को 'नृप' अथवा 'राजा' कहा जाता था । प्रजा की रक्षा करना, कर इकट्ठा करना और सुचारु रूप से शासन व्यवस्था चलाना राजा के कर्तव्य थे ।

राज्य की शासन व्यवस्था उत्तम पद्धति से चलाने के लिए राजा सहायकों के रूप में कुछ अधिकारियों की नियुक्ति करता था । इन अधिकारियों में पुरोहित एवं सेनापति विशेष महत्त्वपूर्ण अधिकारी थे । कर इकट्ठा करनेवाले अधिकारी को 'भागदूघ' कहते थे । भाग का अर्थ 'हिस्सा' होता है । 'जन' की आय में राजा का

'भाग' इकट्ठा करनेवाला अधिकारी 'भागदूघ' था । राजा को मार्गदर्शन करने हेतु 'सभा', 'समिति', विदथ' और 'जन' ये चार संस्थाएँ थीं । इन संस्थाओं में राज्य के लोग सहभागी होते थे । 'सभा' और 'विदथ' संस्थाओं के कामकाज में स्त्रियों का भी सहभाग था । राज्य के वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्तियों के मंडल को 'सभा' कहते थे तथा लोगों की साधारण बैठक को 'समिति' कहते थे । समिति में लोगों का सहभाग रहता था ।

आगे चलकर वैदिक विचारधारा में 'स्मृति' और 'पुराण' नामक साहित्य का निर्माण हुआ । वेद, स्मृति, पुराण, स्थानीय लोकधारणाएँ आदि पर आधारित धार्मिक विचारधारा आगे चलकर 'हिंदू' नाम से पहचानी जाने लगी ।

प्राचीन भारत में यज्ञ विधि और वर्ण व्यवस्था को लेकर वैदिक विचारधारा से भिन्न भूमिका वाली धार्मिक विचारधाराएँ अस्तित्व में थीं । अगले पाठ में हम उन विचारधाराओं का परिचय प्राप्त करेंगे ।

स्वाध्याय

१. पाठ में दिए पाठ्यांश का विचार करके उत्तर लिखो :

(१) वैदिक साहित्य में विदुषियाँ
.....

(२) वैदिक युग के मनोरंजन के साधन
.....

(३) वैदिक युग के चार आश्रम
.....

२. सत्य अथवा असत्य पहचानो :

(१) यज्ञ में जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता था – ऋग्वेद

(२) जिस वेद को अथर्व ऋषि का नाम दिया गया –अथर्ववेद

(३) यज्ञ विधियों के समय मंत्र गायन हेतु मार्गदर्शन करनेवाला वेद –सामवेद

३. एक शब्द में उत्तर लिखो :

(१) वैदिक साहित्य की भाषा ..... है ।

(२) विद् का अर्थ ..... है ।

(३) गोधूम का अर्थ ..... है ।

(४) परिवार का प्रमुख से तात्पर्य ..... है ।

(५) श्रेणियों के प्रमुख को ..... कहते थे ।

४. नाम लिखो :

(१) वे वाद्य : जो तुम्हें मालूम हैं ।
.....

(२) वर्तमान समय की स्त्रियों के कम-से-कम दो आभूषण .....

(३) वर्तमान मनोरंजन के साधन
.....

५. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) वैदिक युग के लोगों के भोजन में किन-किन पदार्थों का समावेश था ?

(२) वैदिक युग में गायों की विशेष सावधानी क्यों बरती जाती थी ?

(३) संन्यासाश्रम में मनुष्य से किस प्रकार के आचरण की अपेक्षा की जाती थी ?

६. टिप्पणी लिखो :

(१) वैदिक युग की धार्मिक संकल्पनाएँ

(२) वैदिक युग के मकान

(३) वैदिक युग की शासन व्यवस्था

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के कुछ कारीगरों से बातचीत करो और उनकी जानकारी लिखो ।

(२) पाठ में आए हुए नए शब्दों और उनके अर्थों की सूची बनाओ ।

* * *